© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

श्रीमद्भागवत पुराण में प्रतिपादित भक्ति तत्व एवं भारतीय समाज

डॉ0 बीनू सिंह
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद।

संसार–दुखः से छूटकर मुक्तिलाभ करने के प्राचीनकाल से भारतवर्ष में तीन निवृत्ति मार्ग प्रचलित रहे है– ज्ञानमार्ग, योगमार्ग, तथा भक्तिमार्ग। इन तीनों मार्गों में भक्ति अति सरलमार्ग है। वेद–वेदान्त का परिज्ञान सर्वसाधारण के लिए कठिन ही है। रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत ही इस ज्ञान को सर्वसाधारण के लिए सुलभ बनाते हैं। इसी ग्रन्थत्रयी को हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा करते हुए हिन्दूमात्र के हृदय में निज धर्म सम्बन्धी ज्ञान और अनुराग का प्रदीप अद्यावधि प्रज्वलित रखने का श्रेय है।

भागवतकार श्री व्यास जी ने भागवत का परिचय इन शब्दों में दिया है–
श्रीमद्भागवतं पुराणतिलकं यद् वैष्णावानां धनं
यस्मिन् पारमहंस्यमेवममलं ज्ञानं परं गीयते।
यत्रज्ञानविरागभक्तिसहिंत नैष्कर्म्यमाविष्कृतं।
तच्छृण्वन् प्रपठन् विचारणपरो भक्त्या विमुच्येन्नरः।।[1]

यह भागवत पुराणों का तिलक और वैष्णवों का धन है। इसमें परमहंसों के विषृद्ध ज्ञान का ही वर्णन है तथा ज्ञान, वैराग्य और भक्ति के सहित निवृत्ति मार्ग को प्रकाषित किया गया है। जो पुरूष भक्तिपूर्वक इसके श्रवण पठन और मनन में तत्पर रहता है वह मुक्त हो जाता है। भागवत पुराण का अनुषीलन मानव को एक सुव्यवस्थित जीवन शैली प्रदान करता है। मानव का विवके जागरित होता है। विवेकषून्यता के कारण मानव मानसिक रूप से अषान्त होकर दुष्कर्मों में प्रवृत्त हो रहा है। ऐसे समय में भागवतपुराण के सदुपदेष एवं षिक्षांए अति प्रासंगिक हो गयी है। श्रीमद्भागवत पुराण को वेद व्यास ने भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की स्थापना के लिए प्रकाषित किया है। यह पुराण प्रेम लक्षणा भक्ति का प्रकाष करने वाला है।

भागवतकान ने माहात्म्य में ही भक्ति को इस रूप में वर्णित किया है।

अहं भक्तिरिति ख्याता इमौ मे तनयौ मतौ।
ज्ञान वैराग्यनामानी कालयोगेन जर्जरौ।[2]

मेरा नाम भक्ति है ये ज्ञान और वैराग्य नामक मेरे पुत्र है। समय के फेर से ही ये जर्जर हो गये है। विचारणीय बिन्दु है कि भक्ति के बिना ही ज्ञान और वैराग्य अर्थहीन है। यदि व्यक्ति अपने को ज्ञानी मान बैठता है तो अहंकार प्रविष्टि हो जाता है। अतः ज्ञान की स्थिति में भक्ति भावना का होना आवष्यक है। समाप्रंत मानव भक्ति को विस्मृत कर कष्ट पा रहा है। भागवतकान ने भक्ति ज्ञान की स्थिति में भक्ति को कलियुग में अत्यन्त कष्टित बतलाया है। भक्ति कह रही है कि कष्टित होकर मै। विदेष जा रही हूॅ।[3] आज पष्चात्य देषों में लोग भक्ति को सहजयता स्वीकार कर रहे हैं परन्तु भारत में उदासीनता देखने को मिल रही। भागवतकार भक्ति के नौ प्रकार बतलाये हैं–

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।[4]

भगवान् के गुण–लीला–नाम आदि का श्रवण, उन्ही का कीर्तन, उनके रूप–नाम आदि का स्मरण उनके चरणों की सेवा, पूजा–अर्चना, वन्दन, दास्य, सख्य तथा आत्म निवेदन है। यदि भगवान् के प्रति समर्पण के भाव से यह नौ प्रकार की भक्ति की जाय, तो मैं उसी को उत्तम अध्ययन समझता हूॅ। नवधा भक्ति का न केवल सैद्धान्तिक महत्व है। अपितु व्यवहारिक जीवन में भी इससे अनेक लाभ है।

गोपियों की भक्ति भावना का वर्णन में भावगतपुराण का प्राणतत्व है। भगवान् श्रीकृष्ण की परमलीलाओं से सम्पूर्ण ब्रजवासी अभिभूत है।

गोपियॉ भाव–विभोर होकर कहती है–
अक्षण्वतां फलमिदं न परं विदामः
सख्यः पषूननु विवेषयतोर्वयस्यैः।
वक्त्रं ब्रजेषसुतयोरनुवेणुजुष्टं।
यैर्वा निपीतमनुरत्ककटाक्षमोक्षम्।।[5]

अरी सखी! ळमने तो ऑख वालों के जीवन और उनकी ऑखों की बस यही इतनी ही सफलता समझी है और तो हमें कुछ मालूम ही नही वह कौन सा लाभ है। वह यही है कि जब श्याम सुन्दर श्री कृष्ण और गौर सुन्दर बलराम ग्वाल वालों के साथ गाय को हांककर वन में ले जा रहे हों या लौटाकर ब्रज में ला रहे हो उन्होने अपने अधरों पर मुरलीधर रखी हो और प्रेम भरी तिरछी चितवन से हमारी ओर देख रहे हों उस समय हम उनकी मुख माधुरी का पान करती रहें।

समस्त ब्रज में जिस समरसता पूर्ण वातावरण का भागवाकार ने वर्णन किया है आज के ईर्ष्याद्वेषमय वातावरण के लिए प्रेरणास्त्रोत है।

भक्ति भावना में भगवान् से भी अधिक महत्व भगवन्नाम को दिया गया है इसका कारण है कि मनुष्य की अनन्त अन्तष्चेतना का विकास इसी पर आधारित है। नाम स्मरण द्वारा आदर्ष प्रतिष्ठा की कामना श्रीमद्भागवत का अभिप्रेत है। भगवान् की परमपावन कथा श्रवण समस्त कष्टों को हरण करने वाली है।

त्व कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मवापहं
श्रवणं मंगलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदाः जनाः[6]

हे प्रभो तुम्हारी लीला कथा भी अमृत स्वरूप है। विहरी लोगों के लिए जीवन सर्वस्व है। भक्त कवियों ने उसका गान किया। आपकी कथा सभी पापों को मिटाती है। परमंगल और कल्याण करती है आज के विस्तारवाद के युग में अनेक आधि–व्याधि से मानव त्रस्त हैं। ऐसे में भगवन्नाम संकीर्तन एवं कथा इन दुःखो से आत्यन्तिक निवृत्ति दिलाने वाले हैं।

श्रीमद्भागवत् पुराण में प्रतिपादित भक्ति भावना का प्रभाव भक्ति आन्दोलन पर देखने को मिलता है। सूरदास की भक्ति–अभिव्यंजना पूर्णतया भागवत पुराण पर आधारित है। भागवतकार ने जिस रूप में एकेष्वरवाद की स्थापना की सूरदास ने भी उसी रूप में व्याख्यायित किया है। जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादि.....सत्यं परं धीमहि[7] की भावना को इस रूप में सूरदास रखते हैं–

सदा एक रस एक अखण्डित.....आदि अनादि अनूप[8] ।

भारतीयों के धार्मिक जीवन, विष्वास और मान्यताओं को भक्ति आन्दोलन के सन्तों एवं सूफी सन्तों ने सर्वाधिक प्रभावित किया। भक्ति आन्दोलन के सन्तों की भॉति सूफी सन्तों ने ईष्वर के प्रति समर्पण की भावना और ईष्वर भक्ति पर बल दिया। उस समय देष में मुसलमानों का राज्य सम्प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव गर्व और उत्साह के लिए अवकाष न रह गया। राजनीतिक उलट फेर से हिन्दू जन समुदाय पर बहुत दिनों तक उदासी सी छायी रही। आततायियों के अत्याचार से हताष भारतीय समाज के भवगान् की भक्ति और करूणा की ओर जाने के अलावा दूसरा मार्ग ही क्या था। धर्म का प्रवाह कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीन धाराओं से चलता है। धर्म को सजीव दयाा में रखने के लिए तीनों का सार्मजस्य आवष्यक है। उम समय लोग चतुर्दिक् अषान्तिमय वातावरण में भागवतपुरागण जैसे पवित्र ग्रन्थों के अध्ययन के लिए उद्यत हुए। सगुण शाखा में रामाश्रयी तथा कृष्णाश्रयी दोनों शाखाओं में भागवत का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। तुलसीदास ने भागवतपुराण में प्रतिपादित भक्ति के आधार पर अपने भक्ति सम्बन्धी विचारों से जनकल्याण किया। यह भक्तिभावना न केवल व्यक्ति विषेष के लिए उपादेय सिद्ध हुई अपितु समस्त समाज का उपकार किया।

वल्लभ की भक्ति अभिव्यंजना भी भागवत पर ही आधारित हैं भागवत में निहित भक्ति को आधार बनाकर उन्हें जनकल्याण किया। विद्वान लेखक रामनाथ भट्ट लिखते है, ''कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुखाचार्य वल्लभ ने अपनी भक्ति व्याख्या भागवत के आधार पर की। कृष्णाश्रय नामक प्रकरण ग्रन्थ में इन्होने अपने समय ही अत्यन्त विपरीत दषा का वर्णन किया है।[9] इस भक्ति आन्दोलन ने तात्कालिक समाज को सदाचार पूर्ण बनाया यद्यपि भक्ति भाव के आड़ में भारत में आलस्य एवं रूढ़ता जैसी कुरीतियॉ आ गयी परन्तु यह बात स्वीकार्य नही है। क्योंकि यह व्यक्ति का दोष है इसे दूर करने की आवष्यकता है।

जब तक मनुष्य भागवत को पढ़ता नही है और इसकी श्रद्धा इसमें न हो तब तक वह समझ नही सकता कि ज्ञान, भक्ति तथा वैराग्य का यह विषाल समुद्र है। पाष्चात्य प्रभाव के कारण भले ही भारतीय जन जीवन पूर्णतः भ्रमग्रस्त हो गया हो, भले ही उसे अपने आर्षग्रन्थों में अनेक बाते आष्चर्यजनक आकस्मिक एवं अयोग्य प्रतीत होती हों परन्तु श्रीमाद्भागवत के अध्ययन से निष्चय ही श्रद्धा की उपलब्धि के साथ शंकाओं का समाधान हो जायेगा।

वर्तमान समय में जब संसार के बहुत अधिक भागों में भंयकर युद्ध छिड़ा हुआ है। आतंकवाद से जमानत त्रस्त है। मनुष्य मात्र को इस पवित्र भक्ति भाव का उपदेष अत्यन्त कल्याणकारी होगा।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देष्य है कि भागवत में प्रतिपादित भक्ति भावना की चेतना पाकर किस प्रकार भारतीय समाज में सदाचार का वातावरण प्रतिष्ठित हुआ अद्यावधि किस रूप में प्रवर्तमान है। तथा भक्ति माध्यम से उसका कैसे अधिकाधिक विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. श्रीमद्भागवत पुराण गीता प्रेस गोरखपुर माहात्म्य अ0 6/82
2. श्रीमद्भागवत पुराण गीता प्रेस गोरखपुर माहात्म्य अ0 1/45
3. श्रीमद्भागवत पुराण गीता प्रेस गोरखपुर माहात्म्य अ0 1/51
4. श्रीमद्भागवत पुराण गीता प्रेस गोरखपुर सप्तम स्कन्ध अ0 5/23
5. श्रीमद्भागवत पुराण गीता प्रेम गोरखपुर दषम अ0 21/7
6. श्रीमद्भागवत पुराण गीता प्रेस गोरखपुर दषम अ0 31/9
7. श्रीमद्भागवत पुराण गीता प्रेम गोरखपुर प्रथम स्कन्ध अ0 1/1
8. सूरसारावती–सूर सागर–बे0 प्र0 पृं0 34
9. कृष्णाश्रय शोडष ग्रन्थ वल्लभ सम्पादक भट्ट नि0 प्रे0 मुम्बई।